अ ली क

अंक: छह

मार्च।। फाल्गुन।। 2025

ISSUE- VI, MARCH 2025 Rs. 50.00 ALEEK PATRIKA

हिरन

हिरन को घेर लिया गया है
हर तरफ बरछियाँ हैं लाल–लाल फालों वाली
हिरन चौंककर खड़ा हो गया है
गरदन पीछे की ओर तन गयी है
किसी तरफ से निकलने का रास्ता नहीं है।

वे क्रूर नहीं हैं
उसे मारेंगे नहीं सिर्फ गिरफ्तार करेंगे।
उसे सहलायेंगे
मुलायम पत्तियाँ खिलायेंगे
पालतू बनायेंगे।
और वह घिरा हुआ,
अचकचाया,
देखता है,
पैरों में अभी छलाँग लगाने का दम है
लेकिन चारों ओर बरछियाँ हैं।
निकलने का कोई रास्ता नहीं है।

-विजय देव नारायण साही

Edited and published by Neel Kamal from 244, Bansdroni Place, Kolkata- 700070 and printed at Jayasree Press, Kolkata- 700009.

लीक लीक गाड़ी चले लीकहिं चले कपूत

लीक छोड़ तीनों चलें शायर सिंह सपूत

अ ली क

मार्च ।। फाल्गुन ।। 2025

अंक:छह

सम्पादक

नील कमल

आवरण चित्र: *मुरगुमा लेक, पुरुलिया*

आवरण कविता: *विजय देव नारायण साही (साभार © सुस्मिता साही श्रीवास्तव)*

अलीक पत्रिका के लिए नील कमल द्वारा 244, बाँसद्रोणी प्लेस, कोलकाता -700070 से प्रकाशित

दूरभाष: 9433123379/ 8013046813

ई-मेल: nneelkkamal@gmail.com

कविताएँ

पुष्पेन्द्र फाल्गुन

बिना शीर्षक की तीन कविताएँ

1

नागरिक शब्द में बड़ा जादू है

(यह वाक्य एक अलिखित कहानी का शीर्षक है। क्योंकि शीर्षक लिखने के बाद

कहानीकार संदिग्ध हालात में मरा पाया गया।)

वे कौन हैं

जिन्हें शीर्षक तक में नागरिक पसंद नहीं?

2

सूरज को पसंद नहीं है आँखें

अग्नि को रीढ़ पसंद नहीं

मैं सोचता हूँ कि आखिर खड़ा होऊँ तो कैसे

कि सूरज को कभी न दिखें मेरी आँखें

और आग से बची रहे मेरी रीढ़

जबकि आग चारों तरफ लगी है

और सूरज मेरी आँखों में ही पल रहा है

3

गले में भात फँसने से कवि की मौत

कैसा रहेगा यह शीर्षक

पानी के दो घूँट गले से उतारते हुए मैंने बेटी से पूछा

उसने भौंहे चढ़ाकर आँखें बंद कर लीं कुछ इस अंदाज़ में

कि बहुत हो गई पापा आपकी बकवास

दरअसल अभी मैं बेसन-भात खा रहा था

बेसन-भात मुझे अप्रिय है लेकिन मुफलिसी का गुज़ारा इसी पर जारी है

भात अक्सर मेरे गले में अटक जाया करता है

दो-एक बार तो दम घुटने तक की नौबत भी आ गयी

पर दो घूँट पानी गरीब को मरने से हर बार बचा लेते हैं

भात गले में फँसने से कवि की मौत

यह शीर्षक शायद अखबारों को रुच भी जाए

लेकिन सत्ता इसे कभी नहीं पचा पाएगी

एक एसआइटी के जरिए यह जांच जरुर कराएगी

कि जिसे हम मारना चाहते थे वह गले में भात फँसने से आखिर कैसे मर सकता है!

शीर्षक वाली नौ कविताएँ

बात अभी समाप्त नहीं हुई है

आवाज़ बाज़ार से उठी थी पर क्या बाज़ारू भी थी?

उठी हुई वह आवाज़ मुझे भी दरियाफ़्त कर आयी

बदल दी मैंने भी अपनी पहचान की तमाम नुमाइशी और खोखली गिरहें

और खोलकर उघाड़ दीं सारी पैबंद गहराइयाँ

हदें बेहद हुईं तो उखड़ गए बरसों के तटबंध

सब उथल-पुथल

सब नाश-नष्ट

सिकुड़ी आँखें फैलीं और फैलीं और फिर और और खुलने लगीं

बेपरवाह कालापन

घनघोर अंधकार

सब ओर त्राहि सब त्रस्त-त्रस्त

गड्डमगड्ड सब गिर-धड़ाम

भागे जाते सब नाम-अनाम